Mahatma Gandhi Shati Smarak Mahavidyalaya,

Garua Maksoodpur, Ghazipur

Seminar on the Historical Relevance of Mahabharat

21 जनवरी, 2023 को महात्मा गांधी शति स्मारक महाविद्यालय गरुआ मकसूदपुर, गाज़ीपुर संस्कृत विभाग के तत्वावधान और अन्य विभागों के सहयोग से महाविद्यालय में छात्रों के लिए एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला की विषय वस्तु "**महाभारत की एतिहासिक प्रासंगिकता**" था।

कार्यशाला का शुभारंभ प्राचार्य सुशील तिवारी के अध्यक्षीय उद्बोधन से हुआ।इस कार्यशाला में डा अश्वनी जी प्रमुख प्रवक्ता थे।

डा अश्वनी जी ने अपने व्याख्यान में कहा की महाभारत के विषय में कहा जाता है कि कहीं में संसार आपको वह है (में महाभारत) यहाँ जो' आपको में संसार वो है नहीं यहाँ जो और जायेगा। मिल अवश्य कहीं न है मत का लोगों अनेक बावजूद इसके लेकिन 'मिलेगा। नहीं कहीं अन्यत्र आखिर की करने चर्चा पर प्रासंगिकता की महाभारत बाद वर्षों इतने कि जरूरत ही क्या है? ऐसे लोग ठीक हैं या गलत इसकी चर्चा बाद में पहले यह देखे कि महाभारत कब हुआ था। इसको लेकर अनेक मत है। अनेक लोग इसे आज से 5500 वर्ष पूर्व की घटना बताते है। अब जो लोग पांच हजार साल पुराने ग्रन्थ की प्रासंगिकता को व्यर्थ बताते हैं उन्हें बताना पड़ता है कि सूर्य, पृथ्वी, चन्द्रमा तो लाखों वर्ष पुराने हैं। क्या आज इनकी प्रासंगिकता समाप्त हो गई है? नहीं, हर्गिज नहीं। तब महाभारत की वर्तमान में प्रासंगिकता की चर्चा भी महत्वपूर्ण है और सदा रहेगी।

महाभारत हमारा साहित्य है (महाकाव्य), इतिहास है और हमारा अध्यात्म है। न्याय, शिक्षा, चिकित्सा, ज्योतिष, युद्धनीति, योगशास्त्र, अर्थशास्त्र, वास्तुशास्त्र, शिल्पशास्त्र, कामशास्त्र, खगोलविद्या तथा धर्मशास्त्र है। जो अपने समय का शाश्वत सत्य भी हैं। एक ऐसे युद्ध की कथा और व्यथा है, जो हमें न केवल बाहरी बल्कि भीतरी शत्रुओं से सावधान करता है। भीतरी का अर्थ भी व्यापक है। घर, परिवार, कुटम्ब, समाज, देश ही नहीं, अपने मन नकारात्मक रहे चल भीतर के मस्तिष्क-योग। विषाद का अर्जुन यथा है। शामिल उसमें भी विचार

विश्वास न हो तो उठाकर देख लो, इसमें रागहै द्वेष-, श्रृंगार है, रतिप्रसंग हैं, वात्सल्य है, द्वेष है, ईर्ष्या है, कामना है, तृष्णा है, क्रोध है, उत्साह है, भय, जुगुप्सा और शोक सब कुछ है। अर्थात् वे सारे भाव आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने सहस्त्रों वर्ष पूर्व थे। जिस प्रकार प्रकृति के नियम नहीं बदले, आधुनिक होकर भी मानवीय प्रवृत्तियां नहीं बदली उसी प्रकार महाभारत की प्रसंगिकता भी बरकरार है। परिस्थितियों और परिवेश में बहुत बदलाव के बावजूद महाभारत के अनेक प्रसंग वर्तमान में भी समान रूप से प्रासंगिक हैं।

महाभारत की प्रासंगिकता धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र के सुदर्शन व्यक्तित्व, गीताकार योगीराज भगवान कृष्ण उर्फ रणछोड जी से ही हैं। सर्वप्रथम उन्हें प्रणाम करते हुए उनके चरित्र और व्यवहार से कुछ सीखने का प्रयास करें। श्रीकृष्ण के लिए जनहित महत्वपूर्ण है। शिशुपाल के हमलो से जनता को बचाने के लिए वे ब्रज से द्वारका चले जाते है। अनावश्यक विवादों को टालना उनसे सीखा जा सकता है। आज भी ऐसा करके हम अपने समाज को विवादो से बचा सकते हैं।

महाभारत के बारे में सबसे बड़ी गलत धारणा यह है कि यह हिंसा का समर्थन करती है। वास्तविकता यह है कि महाभारत की हिंसा और अहिंसा, दोनों ही मानवता के लिए सदा ही प्रासंगिक रहेंगी। **अहिंसा परमो धर्मः धर्म हिंसा तथैव चः स** अर्थात् यदि अहिंसा परम् धर्म है, तो धर्म के लिए हिंसा भी उचित है। वर्तमान में दुनिया भर के कानून भी आत्मरक्षा में हिंसा को उचित मानते है। यदि महाभारत हिंसा है तो फिर

समाज में शांति स्थापित करने के लिए आज की पुलिस क्या करती है? दुष्टों अपराधियों को दण्ड। यही बात श्रीकृष्ण कहते हैं- **परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्। धर्मसंस्थापना र्थाय सम्भवामि युगे युगे।**

महाविद्यालय के प्राचार्य श्री सुशील कुमार जी ने बताया की महाभारत इसलिए भी हुआ क्योंकि शांति के सभी प्रयास असफल रहे। यहां तक कि पांडव केवल 5 गांव लेकर समझौते के लिए तैयार थे। लेकिन कहा गया, 'सुई के नोक के बराबर भी जगह नहीं देंगे। ' आज था जिनका कश्मीर सारा तक कल है। बदली कहां स्थिति भी आज पंडितों कश्मीरी उन्हींके लिए एक बस्ती बसाने की बात आती है तो उसी तरह से नकारा जाता है मालूम नहीं किसे देंगे। नहीं जगह भी इंच एक - तोड़े मंदिर हिन्दू हजारों आजतक लेकर से मुगलकाल कि, गये। जिन्हें विश्वास नहीं वे दिल्ली में महरोली में कुतुबमीनर के पास बनी मस्जिद के बाहर लगा शिलालेख पढ़ लें जिसपर उसके हजारो हिंदू और जैन मंदिरों को तोड़कर उनकी सामग्री से बने होने की बात लिखी है। ऐसे एक नहीं हजारो अन्य प्रमाण भी है। लेकिन समय की सूई उल्टी नहीं घूम सकती। इसीलिए उनसे कहा गया, ' सब रखोमथुरा तीन केवल -, कांशी अयोध्या के मंदिर लौटा दो।लेकिन ' आज भी जवाब वहीं है।

कार्यशाला का समापन श्रीराजीव द्वारा दिए गए धन्यवाद उद्बोधन के साथ हुआ।

प्राचार्य
महात्मा गांधी शती स्मारक महाविद्यालय
गरूआ, मकसूदपुर-गाजीपुर